❖ फणीनागवंश

- ✓ भोरमदेव मंदिर से प्राप्त लेख
- ✓ कल्चुरियों के अधीन थे
- ✓ मड़वा महल के शिलालेख
- ✓ क्षेत्र – कवर्धा
- ✓ शासक –
  1. अहिराज – संस्थापक
  2. गोपालदेव
     - – 1089 ई. में भोरमदेव मंदिर का निर्माण
     - – भोरमदेव मंदिर – छत्तीसगढ़ का खजुराहो
     - – चंदेलशैली (नागरशैली) में निर्मित
  3. रामचन्द्र देव
     - – कल्चुरी राजकुमारी अंबिकादेवी से विवाह
     - – 1349 में जिस स्थान पर विवाह किया वहां मड़वा महल का निर्माण कराया।
     - – इसे इल्हादेव (मड़वा महल) भी कहते हैं।
     - – गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है।

❖ कांकेर का सोमवंश (1130 से 1320 ई.)

- ✓ शासन क्षेत्र – कांकेर
- ✓ शासक – सिंहराज – संस्थापक

सिंहराज – संस्थापक
↓
वाघराज (व्याघ्रराज)
↓
बोपदेव
↓
- कर्णराज ↓ (सिहावा के अभिलेख)
- सोमराज ↓ पम्पराज ↓ (कांकेर के तहनकापारा से प्राप्त ताम्रपत्र)
- कृष्ण ↓ जैतराज ↓ सोमचन्द्र ↓ भानुदेव ↓ (कांकेर शिलालेख)

❖ छिंदक नागवंश

- ✓ शासन काल – 1023 ई. से 1324 ई.
- ✓ राजधानी – चक्रकोट / भ्रमरकोट / बारसूर
- ✓ उपाधि – भोगवतीपुरेश्वर
- ✓ गोत्र – कश्यप
- ✓ कुल – छिंदक
- ✓ संस्थापक – नृपतिभूषण – संस्थापक

नृपतिभूषण – संस्थापक
↓
धारावर्ष – चंद्रादित्य सामंत – तालाब व मंदिर, बारसूर में
↓
मधुरांतक देव
↓
माता – गुण्डमहादेवी → सोमेश्वर देव–I → कुरुसपाल अभिलेख – "चक्रकूटाधीश्वर"
↓
पत्नी – गंगमहादेवी → सोमेश्वर देव–II
↓
जगदेव भूषण – मणिकेश्वरी (दंतेश्वरी) देवी का भक्त था
↓
हरिशचन्द्र देव → चमेली देवी (पुत्री)

बस्तर नागवंश की शाखा → ~~~~~> इन्द्रावती नदी

- उत्तर
  - → अभिलेखों में भाषा संस्कृत, लिपि–देवनागरी
  - → शावक संयुक्त व्याघ्र चिन्ह, शैव धर्म को मानने वाले
- दक्षिण
  - → भाषा व लिपि – तेलुगु
  - → कमल – कदली चिन्ह
  - → वेष्णव धर्म को मानने वाले

- ✓ इस वंश का अंतिम शिलालेख 'टेमरा' से प्राप्त हुआ है जिसे सती स्मारक अभिलेख कहते हैं। जिसमें हरिशचन्द्र देव का वर्णन है।
- ✓ काकतीय शासक अन्नमदेव ने हरिशचन्द्र देव व उसकी पुत्री चमेली देवी को पराजित कर बस्तर में काकतीय वंश की नींव रखी।

❖ कलचुरी वंश

➢ रतनपुर शाखा

1. 1000 – 1020 ई. – कलिंगराज
2. 1020 – 1045 ई. – कमलराज
3. 1045 – 1065 ई. – रत्नदेव-I
4. 1065 – 1095 ई. – पृथ्वीदेव-I
5. 1095 – 1120 ई. – जाजल्लदेव-I
6. 1120 – 1135 ई. – रत्नदेव-II
7. 1135 – 1165 ई. – पृथ्वीदेव-II
8. 1165 – 1168 ई. – जाजल्लदेव-II
9. 1168 – 1178 ई. – जगद्देव
10. 1178 – 1198 ई. – रत्नदेव-III
11. 1198 – 1222 ई. – प्रतापमल्ल
12. 1480 – 1525 ई. – बाहरेन्द्र साय
13. 1544 – 1581 ई. – कल्याण साय
14. 1581 – 1596 ई. – लक्ष्मण साय
15. 1596 – 1606 ई. – शंकर साय
16. 1606 – 1622 ई. – मुकुन्द साय (कुमुद)
17. 1622 – 1653 ई. – त्रिभुवन साय
18. 1653 – 1656 ई. – अदली साय
19. 1656 – 1675 ई. – जगमोहन साय
20. 1675 – 1689 ई. – रणजीत साय
21. 1689 – तखतसिंह
22. 1689 – 1712 ई. – राजसिंह
23. 1712 – 1732 ई. – सरदार सिंह
24. 1732 – 1745 ई. – रघुनाथ सिंह
25. 1745 – 1758 ई. – मोहन सिंह

➢ रायपुर शाखा

1. 1300 – 1340 ई. – लक्ष्मीदेव
2. 1340 – 1380 ई. – सिंघण देव
3. 1380 – 1400 ई. – रामचन्द्र देव
4. 1400 – 1420 ई. – हरिब्रम्हा देव / ब्रम्हदेव राय
5. 1420 – 1438 ई. – केशव देव
6. 1438 – 1468 ई. – भुवनेश्वर देव
7. 1468 – 1478 ई. – मानसिंह देव
8. 1478 – 1498 ई. – संतोषसिंह देव
9. 1498 – 1518 ई. – सूरतसिंह देव
10. 1518 – 1528 ई. – सैनसिंह देव
11. 1528 – 1563 ई. – चामुण्डासिंह देव
12. 1563 – 1582 ई. – वंशीसिंह देव
13. 1582 – 1604 ई. – धनसिंह देव
14. 1604 – 1615 ई. – जैतसिंह देव
15. 1615 – 1636 ई. – फत्तेसिंह देव
16. 1636 – 1650 ई. – यादसिंह देव
17. 1650 – 1663 ई. – सामेदत्त देव
18. 1663 – 1682 ई. – बलदेवसिंह देव
19. 1682 – 1705 ई. – उमेन्द्र देव
20. 1705 – 1741 ई. – बनवीर सिंह देव
21. 1741 – 1753 ई. – अमरसिंह देव

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

➢ रतनपुर शाखा के कलचुरी

- कलिंगराज (1000 – 1020 ई.)
  - ✓ छत्तीसगढ़ में कलचुरी का संस्थापक
  - ✓ राजधनी – तुम्माण
  - ✓ तुम्माण – महिसासुर मर्दनी का मंदिर

- कमलराज (1020 – 1045 ई.)
  - ✓ त्रिपुरी के शासक गांगेयदेव द्वारा ओडिशा पर आक्रमण के अवसर पर कमलराज ने उसकी सहायता की।
  - ✓ उड़ीसा से साहिल्ल नामक योद्धा को अपने साथ लेकर आया।

- रत्नदेव-I (1045 – 1065 ई.)
  - ✓ रतनपुर के समीप कोमे ग्राम (कोमोमण्डल) प्रमुख वजुवर्मा की पुत्री नोनल्ला से विवाह।
  - ✓ मणिपुर नामक ग्राम को नगर का रूप दिया गया उसे अपने नाम पर रतनपुर रखा तथा उसे अपनी राजधानी बनाया।
  - ✓ यश नामक वैश्य को नगर सेठ का पद दिया।
  - ✓ माता महामाया का मंदिर बनवाया।
  - ✓ 1050 ई. में प्रथम अभिषेक (राजधानी तुम्माण से रतनपुर हस्तांतरित करने के अवसर पर)
  - ✓ रतनपुर को "कुबेरपुर" की उपमा दी गई।

- पृथ्वीदेव-I (1065 – 1095 ई.)
  - ✓ 21 हजार गांवों का स्वामी (आमोदा ताम्रपत्र)
  - ✓ उपाधि – सकल कोसलाधिपति
  - ✓ रतनपुर में पृथ्वीदेवेश्वर मंदिर तथा तालाब का निर्माण कराया।

- जाजल्लदेव-I (1095 – 1120 ई.)
  - ✓ सेनापति – जगपाल (जगतपाल)
  - ✓ छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर देव को हराया तथा परिवार सहित कैद कर लिया।
  - ✓ उड़ीसा के शासक भुजबल को हराया।
  - ✓ जाजल्लपुर (जांजगीर) नामक शहर बसाया।
  - ✓ सोने के सिक्के चलाए जिसमें श्रीमद जाजल्लदेव तथा गजशार्दूल अंकित करवाया।
  - ✓ उपाधि– गजशार्दूल (हाथियों का शिकारी)
  - ✓ पाली के शिव मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया।

- रत्नदेव-II (1120 – 1135 ई.)
  - ✓ त्रिपुरी की अधीनता न स्वीकार करने पर 'गयाकर्णसिंह' ने आक्रमण कर दिया।
  - ✓ युद्ध – रत्नदेव-II विरूद्ध गयाकर्ण, विजेता – रत्नदेव-II
रत्नदेव-II विरूद्ध अनंतवर्मन चोडगंग (गंगवंशीय शासक) विजेता – रत्नदेव-II
  - ✓ उपाधि – त्रिकलिंगाधिपति

- पृथ्वीदेव-II (1135 – 1165 ई.)
  - ✓ सेनापति जगपाल ने राजीव लोचन मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।

- जाजल्लदेव-II (1165 – 1168 ई.)

- जगद्देव (1168 – 1178 ई.)

- रत्नदेव-III (1178 – 1198 ई.)
  - ✓ पिता – जगद्देव
  - ✓ माता – सोमल्ला
  - ✓ प्रधानमंत्री (गंगाधर राव) – खरौद लक्ष्मणेश्वर/लाखा चांउर/लखनेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।

- प्रतापमल्ल (1198 – 1222 ई.)
  - ✓ तांबे के चक्राकार एवं षट्कोणाकार सिक्के प्राप्त हुए हैं।
  - ✓ सामंत – जसराज अथवा यशोराज

महत्वपूर्ण :–

1. जाजल्लदेव-I – जगतपाल (जगपाल) – पाली के शिवमंदिर का जीर्णोद्धार
2. पृथ्वीदेव-II – जगपाल – राजीव लोचन मंदिर का जीर्णोद्धार
3. रत्नदेव-III – गंगाधर राव – खरौद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

- बाहरेन्द्र साय (1480 – 1525 ई.)
  - ✓ राजधानी – छुरी कोसगई
  - ✓ कोसगई माता का मंदिर बनवाया।

- कल्याण सिंह (1544 – 1581 ई.)
  - ✓ मुगल सम्राट अकबर का समकालीन था।
  - ✓ उसके दरबार में 8 वर्षों तक रहा।
  - ✓ राजस्व की जमाबंदी प्रणाली शुरू की।
  - ✓ ब्रिटिश अधिकारी मि. चिस्म के अनुसार खालसा अर्थात् गढ़ों से सालाना 6.50 लाख रूपये आय की प्राप्ति होती थी।
  - ✓ 1861–68 में मि. चिस्म ने इसी प्रणाली को आधार बनाकर बिलासपुर जिले का बंदोबस्त किया था।
  - ✓ 1909–1910 में नेल्सन ने इसी बंदोबस्त रिपोर्ट के आधार बिलासपुर गजेटियर तैयार किया था।

- तखतसिंह (1689 ई.)
  - ✓ तखतपुर नामक शहर बसाया।

- राजसिंह (1689 – 1712 ई.)
  - ✓ कवि – गोपाल मिश्र, रचना – खूब तमाशा
  - ✓ रायपुर शाखा के मोहन सिंह को गोद लेकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।
  - ✓ राजसिंह की मृत्यु के समय मोहन सिंह के नहीं होने पर राजसिंह ने सत्ता सरदार सिंह को सौंपा।

- सरदार सिंह (1712 – 1732 ई.)

- रघुनाथ सिंह (1732 – 1745 ई.)
  - ✓ सरदार सिंह के भाई।
  - ✓ 1741 ई. भोंसला सेनापति भास्कर पंत का रतनपुर में आक्रमण।
  - ✓ कलचुरी वंश का अंतिम शासक।

- मोहन सिंह (1745 – 1757/58 ई.)
  - ✓ मराठों के अधीन कलचुरी वंश का अंतिम शासक।

➢ रायपुर के कलचुरी (लहुरी शाखा)

- लक्ष्मीदेव
  - ✓ रतनपुर के कलचुरी शासक का रिश्तेदार
  - ✓ खल्लारी की जमींदारी दी गयी।

- सिंघणदेव
  - ✓ रतनपुर के शासक से युद्ध में शिवनाथ नदी के दक्षिण में स्थित 18 गढ़ों को जीतने वाला।

- रामचन्द्र देव
  - ✓ अपने पुत्र ब्रम्हदेवराय (हरिब्रम्हा) के नाम पर रायपुर शहर की स्थापना।

- ब्रम्हदेव राय/हरिब्रम्हा
  - ✓ दूधाधारी मठ का निर्माण
  - ✓ 1409 में रायपुर को राजधानी बनाया।
  - ✓ 1415 में देवपाल – नारायण/विष्णु मंदिर (खल्लारी)
  - ✓ ब्रम्हदेव का खल्लारी शिलालेख जिसमें 36 गढ़ों की जानकारी प्राप्त होती है।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

नोट :–

(i) केशवदेव
- ✓ रायपुर शाखा का संस्थापक

(ii) अमर सिंह (अंतिम शासक)
- ✓ मराठा आक्रमण (1741 ई. में)
- ✓ पुत्र – शिवराज सिंह

राज्य → गढ़ → बारहों → गाँव
↓ दीवान ↓ दाऊ ↓ गोंदिया

1 गढ़ = 7 बारहों = 7 x 12 = 84 गाँव
1 बारहों = 12 गाँव

➢ कलचुरियों की शासन व्यवस्था
- ✓ राजस्व विभाग का प्रधान – महाप्रमातृ
- ✓ पंचकुल नामक संस्था थी जिसमें 5 सदस्य होते थे, प्रमुख – महत्तम, सदस्य – महत्तर
- ✓ कुलदेवी – गजलक्ष्मी
- ✓ शिव के उपासक
- ✓ कलचुरी कालीन ताम्रपत्र – ''ॐ नमः शिवाय'' से प्रारंभ
- ✓ तुम्माण – वंकेश्वर शिव मंदिर
- ✓ मुद्रा – कौड़ी

➢ मापन व्यवस्था
- ✓ सेरी, पंसेरी, मन

➢ मंत्रीमंडल
- ✓ प्रमुख मंत्री – माहाभात्य / महामात्य
- ✓ विदेश मंत्री – महासंधिविग्रहक
- ✓ राजस्व मंडल मंत्री – महाक्षपटलिक
- ✓ राजा का अंगरक्षक – महाप्रतिहार
- ✓ राजस्व प्रबंधक – महाप्रभातृ
- ✓ दुर्ग (किले) की रक्षा – महाकोट्टपाल

➢ अधिकारी
- ✓ दाण्डिक – न्याय अधिकारी
- ✓ धर्मलेखी – धर्म संबंधी कार्य
- ✓ महापीलूपति – हस्तिसेना
- ✓ महाश्वसाधनिक – अश्वसेना
- ✓ चोरद्धारणिक / इस्टसाधनिक – पुलिस
- ✓ भट्ट – शांति व्यवस्था

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

❖ काकतीय वंश

1. 1324 – 1369 ई. – अन्नमदेव
2. 1369 – 1410 ई. – हमीरदेव
3. 1410 – 1468 ई. – भैरवदेव
4. 1468 – 1534 ई. – पुरुषोत्तम देव
5. 1534 – 1558 ई. – जयसिंह देव
6. 1558 – 1602 ई. – नरसिंह देव
7. 1602 – 1625 ई. – प्रतापराज देव
8. 1625 – 1639 ई. – जगदीशराज देव
18. 1842 – 1853 ई. – भूपालदेव
19. 1853 – 1891 ई. – भैरमदेव
20. 1891 – 1921 ई. – रूद्रप्रताप देव
21. 1921 – 1936 ई. – प्रफुल्ल कुमारी देवी
22. 1936 – 1961 ई. – प्रवीरचंद्र भंजदेव
23. 1961 – 1969 ई. – विजय चन्द्र भंजदेव
24. 1969 – 1996 ई. – भरतचन्द्र भंजदेव
25. 1996 से अब तक – कमलचंद्र भंजदेव

9. 1639 – 1654 ई. – वीरनारायण देव
10. 1654 – 1680 ई. – वीरसिंह देव
11. 1680 – 1709 ई. – दिक्पाल देव
12. 1709 – 1721 ई. – राजपाल देव
13. 1721 – 1731 ई. – चंदेल मामा
14. 1731 – 1774 ई. – दलपत देव
15. 1774 – 1777 ई. – अजमेर सिंह
16. 1777 – 1800 ई. – दरियादेव
17. 1800 – 1842 ई. – महिपालदेव

- अन्नमदेव (1324 – 1369 ई.)
  - ✓ दंतेवाड़ा अभिलेख में अन्नमराज
  - ✓ काकतीय वंश का संस्थापक (बस्तर क्षेत्र में)
  - ✓ रानी– सोनकुंवर चंदेलिन
  - ✓ राजधानी – मंधोता
  - ✓ ''चालकी / चालुक्य वंश राजा''
  - ✓ दंतेश्वरी मंदिर का निर्माण (ग्राम – ताराला)

- पुरुषोत्तमदेव (1469 – 1534 ई.)
  - ✓ राजधानी – मधोता से बस्तर
  - ✓ उड़ीसा के राजा ने 'रथपति' की उपाधि प्रदान की तथा 16 चक्के वाला रथ भेंट किया।
  - ✓ बस्तर में रथयात्रा प्रारंभ की जिसे गोंचा पर्व के नाम से जाना जाता है।
  - ✓ बस्तर दशहरे की शुरुआत

- प्रतापराजदेव (1602 – 1625 ई.)
  - ✓ गोलकुण्डा के शासक कुली कुतुबशाह द्वारा बस्तर में आक्रमण किया गया था जिसमें प्रतापराजदेव विजयी हुए थे।

- राजपालदेव (1709 – 1721 ई.)
  - ✓ रक्षपालदेव
  - ✓ उपाधि – प्रौढ़प्रताप चक्रवर्ती
  - ✓ मणिकेश्वरी देवी (माँ दंतेश्वरी) के भक्त

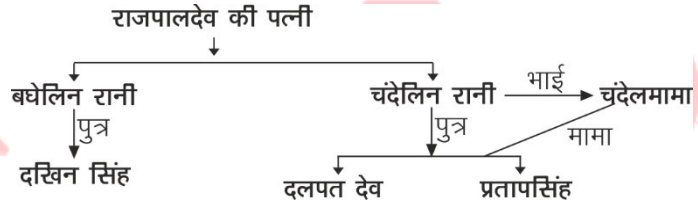

- चंदेलमामा (1721 – 1731 ई.)

- दलपत देव (1731 – 1774 ई.)
  - ✓ 1770 ई. में भोंसला सेनापति नीलूपंत ने बस्तर पर आक्रमण किया लेकिन काकतीय शासक दलपत देव के द्वारा पराजित।
  - ✓ भोंसला आक्रमण के पश्चात 1770 ई. में दलपत देव ने राजधानी बस्तर से जगदलपुर हस्तांतरित की।
  - ✓ दलपत देव के शासन काल में ''बंजारों का बस्तर में व्यापार और नमक का प्रसार''
    - – बंजारों द्वारा वस्तुविनिमय व्यापार प्रारंभ किया गया।
    - – आदिवासियों में नमक और गुड़ के प्रति रुचि बढ़ाई गई।
    - – 1795 ई. कैप्टन ब्लंट के बस्तर के अपने यात्रा वृतांत में इस बात का उल्लेख किया गया है।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

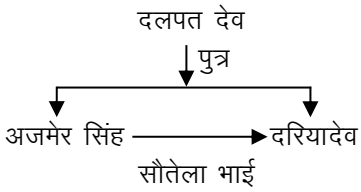

- अजमेर सिंह (1774 – 1777 ई.)
  - ✓ क्रांति का पहला मसीहा
  - ✓ दलपतदेव के शासनकाल में डोंगर का अधिकारी
    1. अजमेर सिंह विरूद्ध दरियावदेव, विजयी – अजमेर सिंह
    2. अजमेर सिंह विरूद्ध दरियावदेव + जॉनसन + मराठा + विक्रमदेव
       इसमें अजमेर सिंह की मुत्यु हुई एवं दरियावदेव विजयी रहा।
  - ✓ 1774 – 1779 – हल्बा विद्रोह (सबसे बड़ा नरसंहार)
  - ✓ चालुक्य का पतन तथा मराठों के अधीन बस्तर

- दरियावदेव (1777 – 1800 ई.)
  - ✓ 1795 ई. भोपालपट्टनम संघर्ष
  - ✓ मराठों के अधीन आया बस्तर
  - ✓ 6 अप्रैल 1778 को 'कोटपाड़ की संधि'
    - बस्तर से दरियावदेव, मराठों की ओर से त्र्यम्बक अवीरराव (भोंसला राजा बिम्बाजी (1758 – 1787 ई.) तथा जैपुर का शासक विक्रम देव
    - मराठों को 59000 रू. टकोली प्रतिवर्ष।
    - कोटपाड़ परगना जैपुर को दिया गया।
    - इस संधि से बस्तर, नागपुर के अधीन रतनपुर राज्य के अंतर्गत चला गया और इसी समय से बस्तर छत्तीसगढ़ का अंग बना।
  - ✓ 1795 ई. – कैप्टन जे. टी. ब्लंट
    - बस्तर क्षेत्र में प्रथम अंग्रेज अधिकारी की यात्रा।
    - 12.5.1795 से 28.5.1795 तक (17 दिन)
    - बस्तर में प्रवेश नहीं कर पाया।
    - इसे रोकने के लिए भोपालपट्टनम संघर्ष।

- महिपालदेव (1800 – 1842 ई.)–
  - महिपालदेव Vs रामचन्द्र बाघ, विजयी – महिपालदेव
  - महिपालदेव Vs रामचन्द्र बाघ, विजयी – रामचन्द्र बाघ

  पुनः भोंसलों के अधीन

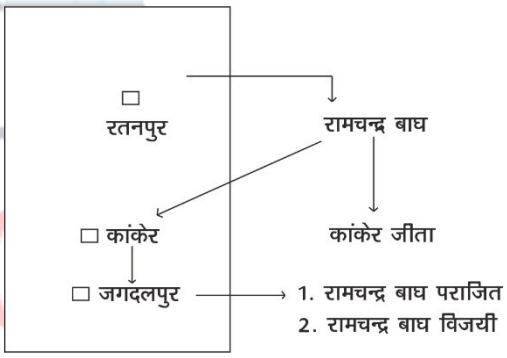

  - ✓ परलकोट विद्रोह – 1825 ई. – शोषण के विरूद्ध
    - परलकोट के जमींदार गेंद सिंह Vs अंग्रेज
      परिणाम – अंग्रेज विजयी व गेंद सिंह की मृत्यु

- भूपाल देव (1842 – 1853 ई.)

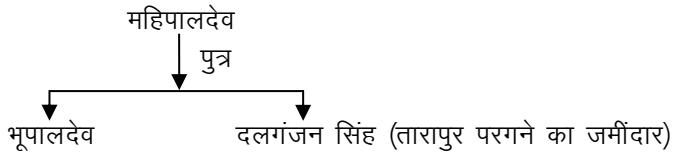

  - ✓ तारापुर विद्रोह (1842 – 1854 ई.)
  - ✓ मेरिया विद्रोह (1842 – 1863 ई.)

- भैरमदेव (1853 – 91 ई.)
  - ✓ प्रथम यूरोपीय, छत्तीसगढ़ संभाग का डिप्टी कमीश्नर मेजर चार्ल्स सी. इलियट का 1856 में बस्तर प्रवेश।
  - ✓ लिंगागिरी का विद्रोह (1856 – 57 ई.)
  - ✓ कोई विद्रोह (1859 ई.)

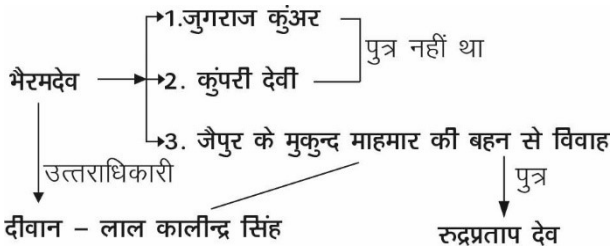

  - ✓ भैरमदेव ने अपना उत्तराधिकारी दीवान लाल कालीन्द्र सिंह को घोषित किया लेकिन दीवान के द्वारा वंश रक्षा को ध्यान में रखते हुए भैरमदेव का विवाह जैपुर के मुकुन्द माहमार की बहन से कराया जिससे रुद्रप्रतापदेव का जन्म हुआ।
  - ✓ रानी चोरिस (1878–86 ई.) (रानी जुगराज कुंअर) – छत्तीसगढ़ की प्रथम विद्रोहिणी

- रुद्रप्रताप देव (1891–1921 ई.)–
  - ✓ शिक्षा – रायपुर के राजकुमार कॉलेज से
  - ✓ रानी – चन्द्रकुमारी देवी
  - ✓ फैगन तथा गेयर क्रमशः प्रशासन के पद पर कार्यरत थे। (लगभग 8 वर्ष)
  - ✓ जन्म – 1885
  - ✓ मृत्यु – 16 नवंबर 1921
  - ✓ पुत्री – प्रफुल्ल कुमारी देवी
  - ✓ जगदलपुर को चौराहों का शहर बनवाया।
  - ✓ उपाधि – सेण्ट ऑफ जेरुसलम।
  - ✓ घैटीपोनी प्रथा –
    - – अर्थ– ''कुटुम्ब की बहाली''
    - – ब्रिटिश अधिकारी चैपमेन के रिपोर्ट के अनुसार रुद्रप्रताप देव ने घैटीपोनी प्रथा चलाया था।
    - – जिसमें वह सुण्डी, धोबी, कलार व पनका जाति की विधवा महिलाओं को बेचता था। (खरीददार उसी जाति का होता था।)
    - – इस प्रथा से उसे आय की प्राप्ति होती थी।
  - ✓ दीवान – बैजनाथ पण्डा
  - ✓ भूमकाल विद्रोह – 1910

- प्रफुल्ल कुमारी देवी (1921 – 1936 ई.)
  - ✓ छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला शासिका व एकमात्र महिला शासिका
  - ✓ मयूर भंज के राजकुमार प्रफुल्लचंद्र भंजदेव से विवाह
  - ✓ 'द इण्डियन वुमन हुड' नामक पत्रिका में महारानी का उल्लेख
  - ✓ लंदन में अपेंडीसायटीस नामक बीमारी से मौत

- प्रवीरचंद्र भंजदेव (1936 – 1966 ई.)
  - ✓ 1948 में बस्तर रियासत का भारत संघ में विलय होने वाले 'विलय पत्र' में प्रवीरचंद्र भंजदेव के हस्ताक्षर थे।
  - ✓ 1966 के गोलीकाण्ड में मृत्यु
  - ✓ ग्रंथ – लोहाण्डीगुड़ा तरंगिणी – इस ग्रंथ में अपने आप को तथा अपने आदिपुरूष अन्नमदेव को काकतीय बताया है।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

आदिवासी विद्रोह

1774 – 1749 ई.	–	हल्बा विद्रोह
1795 ई.	–	भोपालपट्टनम संघर्ष
1825 ई.	–	परलकोट विद्रोह
1842 – 54 ई.	–	तारापुर विद्रोह
1842 – 63 ई.	–	मेरिया विद्रोह
1856 – 57 ई.	–	लिंगागिरी का विद्रोह
1859 ई.	–	कोई विद्रोह
1876 ई.	–	मुरिया विद्रोह
1910 ई.	–	भूमकाल विद्रोह

1. हल्बा विद्रोह (1774 – 1779 ई.)

i. अजमेर सिंह विरूद्ध दरियावदेव
विजयी – अजमेर सिंह

ii. अजमेर सिंह विरूद्ध दरियावदेव + जॉनसन + मराठा + विक्रमदेव
अजमेर सिंह की मृत्यु
अजमेर सिहं की मृत्यु पश्चात दरियावदेव का डोंगर क्षेत्र में हमला।
डोंगर क्षेत्र के हल्बाओं का नरसंहार (अब तक का सबसे बड़ा आदिवासी नरसंहार)

2. भोपालपट्टनम संघर्ष (1795 ई.)

यूरोपीय कैप्टन जे. टी. ब्लंट को बस्तर प्रवेश नहीं करने दिया गया था।

3. परलकोट विद्रोह (1825 ई.)

नेतृत्वकर्ता – गेंद सिंह (परलकोट के जमींदार)
कारण – 1. अबूझमाड़ क्षेत्र में मराठों एवं अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव
2. मराठों एवं अंग्रेजो की शोषणकारी नीति
3. कर में वृद्धि
संकेत/चिन्ह – धावड़ा वृक्ष की टहनियाँ
दमनकर्ता – छत्तीसगढ़ के ब्रिटिश अधीक्षक कैप्टन एग्न्यू (पेबे, एगेन्यु द्वारा नियुक्त)
20 जनवरी, 1825– गेंद सिंह को फांसी (छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद)

4. तारापुर का विद्रोह (1842 – 1854 ई.)

बस्तर शासक – भूपाल देव
कारण – तारापुर परगने का कर बढ़ाना
तारापुर परगने का प्रशासक – भूपाल देव का भाई दलगंजन सिंह

भूपाल देव + दीवान – जगबंधु **विरूद्ध** दलगंजन सिंह + मांझी + तपारापुर के आदिवासी
दलगंजन सिंह विजयी

नागपुर के रेजीमेंट विलियम्स के द्वारा दलगंजन सिंह की गिरफ्तारी तथा दीवान जगबंधु को पद से हटाया गया।
नया कर तारापुर क्षेत्र से वापस लिया गया।

5. मेरिया विद्रोह (1842 – 1863 ई.)

बस्तर शासक – भूपाल देव
दीवान – वामनराव
कारण – दंतेश्वरी मंदिर में प्रचलित नरबलि प्रथा के विरोध में
नेतृत्वकर्ता – हिड़मा मांझी
आदिवासी असफल हुए।

नया अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

6. लिंगागिरी का विद्रोह (1856 – 57 ई.)

बस्तर का महान मुक्ति संग्राम

1854 में हड़प नीति के तहत नागपुर को ब्रिटिश सरकार में मिलाया गया जिसमें बस्तर भी ब्रिटिश सरकार के अधीन आ गया।

नेतृत्वकर्ता – धुर्वाराव माड़िया (भोपालपट्टनम जमींदारी क्षेत्र के तालुका लिंगागिरी का तालुकेदार)

5 मार्च, 1856 को धुर्वाराव को फांसी दी गयी।

7. कोई विद्रोह (1859 ई.)

नेतृत्वकर्ता – नांगुल दोरला

दोरली भाषा में कोई का अर्थ – वनों और पहाड़ों में रहने वाले का आदिवासी

कारण – साल वृक्षों की कटाई

नारा – एक साल वृक्ष के पीछे एक व्यक्ति का सिर

आदिवासियों की जीत हुई।

8. मुरिया विद्रोह (1876 ई.)

बस्तर का स्वाधीनता संग्राम

शासक – भैरमदेव

दीवान – गोपीनाथ कपड़दार

नेतृत्वकर्ता – झाड़ा सिरहा मुरिया

कारण –
1. ब्रिटिश सरकार द्वारा भूराजस्व विषयक प्रयोग
2. दीवान गोपीनाथ कपड़दार का आतंक
3. बेगारी प्रथा एवं शोषणकारी नीतियां

घटनाएं – जनवरी, 1876 – विद्रोह प्रारंभ
राजा को मारेंगा में रोका गया, गोपीनाथ कपड़दार ने आदिवासियों पर गोलियां चलवाईं।
– 2 मार्च, 1876 – जगदलपुर महल को मुरिया आदिवासियों ने घेरा
– मई, 1876 – सिरोंचा के डिप्टी कमीश्नर मैक जार्ज ने विद्रोहियों का दामन किया।
– 8 मई, 1876 – बस्तर में मुरिया दरबार का आयोजन।

9. भूमकाल विद्रोह (1910 ई.)

भूमि का कंपन

''बस्तर बस्तरवासियों का है।''

शासक – रुद्रप्रताप देव, दीवान – बैजनाथ पंडा

कारण –
1. लाल कालेन्द्र सिंह व राजमाता सुवर्ण कुंवर देवी की उपेक्षा
2. घरेलू मदिरा पर पाबंदी
3. बेगारी प्रथा
4. कर वृद्धि
5. बस्तर में बाहरी लोगों का प्रदेश
6. नई शिक्षा नीति
7. पुलिस कर्मचारियों का आदिवासियों पर अत्याचार

घटनाएँ –
1. अक्टूबर, 1909 – दशहरे के दिन ताड़ोकी में सभा (राजमाता व दीवान के द्वारा)
– नेतानार ग्राम के युवक वीर गुंडाधुर को नेता चुना गया।
2. जनवरी, 1910 – ताड़ोकी में गुप्त सम्मेलन
3. 1 फरवरी, 1910 – विद्रोह प्रारंभ
4. 2 फरवरी, 1910 – पूसपाल बाजार लूटा गया। (साहस का परिचय दिया)
5. 4 फरवरी, 1910 – कूकानार बाजार में व्यापारी की हत्या (बुंटु व सोमनाथ द्वारा)
6. 29 मार्च, 1910 – विद्रोह का अंत

दमनकर्ता – पोलिटिकल एजेण्ट 'डी ब्रेट' व सुप्रीम कमाण्डर 'गेयर'

प्रतीक – लाल मिर्च, मिट्टी के ढेले, धनुष–बाण, भाले तथा आम की डालियाँ।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

❖ मराठा शासन (1758 – 1854 ई.)

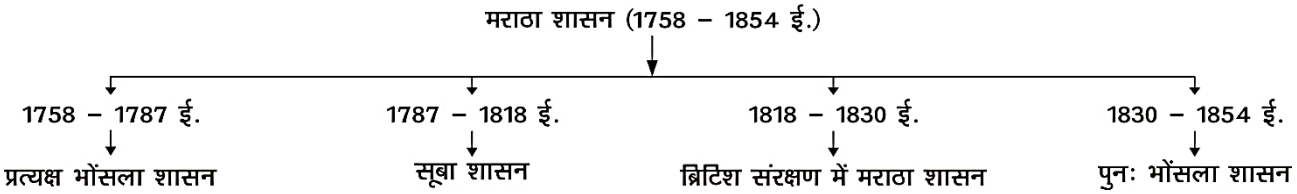

प्रत्यक्ष भोंसला शासन (1758 – 87 ई.)

बिम्बाजी भोंसला (1758 – 87 ई.)

- ✓ रतनपुर और रायपुर का प्रशासनिक एकीकरण किया तथा शासन का संचालन रतनपुर से किया।
- ✓ दो नयी जमींदारी का निर्माण – 1. नांदगांव, 2. खुज्जी
- ✓ रतनपुर में नियमित न्यायालय की स्थापना
- ✓ रतनपुर में रामटेकरी का मंदिर बनवाया।
- ✓ रायपुर में दूधाधारी मंदिर का पुनः निर्माण कराया।
- ✓ पत्नी – 1. उमाबाई, 2. रमाबाई, 3. आनंदी बाई।
- ✓ 1787 ई. – बिम्बाजी की मुत्यु के साथ उमाबाई सती हुई।

सूबा शासन (1787 – 1818 ई.)

1787 – 1811 ई. – व्यंकोजी भोंसला (3 बार छत्तीसगढ़ आया) (सूबा शासन का सूत्रधार या सूबा पद्धति का जन्मदाता)

1811 – 1818 ई. – अप्पा साहब

- ✓ ठेकेदारी व इजारादारी प्रथा
- ✓ यूरोपीय यात्री – 1. 17 मई, 1790 – फारेस्टर
  2. 13 मई, 1795 – जे. टी. ब्लंट
  3. फरवरी, 1799 – कोलब्रुक

1. 1787 – 90 ई. – महीपतराव दिनकर – प्रथम सूबेदार, यूरोपीय यात्री फारेस्टर का छत्तीसगढ़ में आगमन
2. 1790 – 96 ई. – विठ्ठलराव दिनकर – परगना पद्धति का जन्मदाता, कैप्टन ब्लंट का छत्तीसगढ़ आगमन
3. 1796 – 97 ई. – भवानी कालू
4. 1797 – 1808 ई. – केशव गोविंद – सर्वाधिक समय तक सूबेदार रहा, यूरोपीय यात्री कोलब्रुक का छत्तीसगढ़ आगमन
5. 1808 – 1809 ई. – विंकोजी पिड्री व दीरो कुल्लुकर
6. 1809 – 1817 ई. – बीकाजी गोपाल – व्यंकोजी की मृत्यु
7. 1817 ई. – सखाराम हरि – किसानों ने गोली मारकर हत्या की।
8. 1817 ई. – सीताराम टांटिया
9. 1817 – 18 ई. – यादवराव दिवाकर – अंतिम सूबेदार

ब्रिटिश संरक्षण में मराठा शासन (1818–1830 ई.)

- ➢ अप्पा साहब के पतन एवं पलायन के पश्चात 26 जून, 1818 को रघुजी–III को नागपुर राज्य का उत्तराधिकारी बनाया गया।
- ➢ अंग्रेजों ने नागपुर के शासक रघुजी–III की अल्पव्यस्कता की आड़ में नागपुर राज्य का शासन अपने हाथों में ले लिया। फलस्वरूप नागपुर के भोंसला के शासनाधीन क्षेत्र छत्तीसगढ़ का शासन भी ब्रिटीश संरक्षण में आ गया।
- ➢ नागपुर रेसीडेण्ट – (1) जेनकिंस (2) 12 अप्रैल 1827 – विल्डर
- ➢ छत्तीसगढ़ का पहला ब्रिटीश अधीक्षक – कैप्टन एडमंड

छत्तीसगढ़ ब्रिटीश अधीक्षक : (1818–1830 ई)

1. कैप्टन एडमंड (1818 ई)

- ➢ प्रथम ब्रिटीश अधीक्षक
- ➢ डोंगरगढ़ के जमींदार द्वारा विद्रोह (अंगेजी शासन के विरूद्ध)

2. कैप्टन एगन्यु (1818 – 25 ई)

- ➢ 1818 ई. में रायपुर को छत्तीसगढ़ की राजधानी बनाया
- ➢ रायपुर पहली बार ब्रिटिश अधीक्षक का मुख्यालय बना

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

- परगनों का पुर्नगठन

27 परगनों के पुर्नगठित करके – 8 + 1 = 9

(1) रायपुर (2) रतनपुर (3) राजहरा (4) धमतरी
(5) दूर्ग (6) धमधा (7) नवागढ़ (8) खरौद (9) बालोद

धमधा के गोंड राजा के विद्रोह का दमन किया।
1818 – सोनाखान के जमींदार से हड़पे खालसा क्षेत्र को वापस लिया।
1820 ई. में नागपुर रेसीडेण्ट 'जेनकिन्स' की छत्तीसगढ़ यात्रा।

3. **कैप्टन हंटर (1825 ई.)**
4. **कैप्टन सेण्डीस (1825–28ई.)**
   - अंग्रेजी कैलेण्डर जारी किया।
   - पहली बार अंग्रेजी भाषा को सरकारी कामकाज का माध्ययम बनाया ।
   - डाक व तार का प्रसार
   - ताहूतदारी व्यवस्था – बंजर भूमि को कृषि हेतू उपयोगी बनाना (दो ताहूत लोरमी, तरेंगा)
5. **विलकिंसन (1828 ई.)**
6. **क्राफर्ड (1828–29–30 ई.)**
   - 27 दिसंबर 1829 – रघुजी –III और विल्डर के बीच संधि
   -

पुनः भोसला शासन (1830 – 1854 ई.)

शासक – रघुजी –III

छत्तीसगढ़ में शासन के लिए नियुक्त होने वाला मराठा अधिकारी 'जिलेदार' कहलाए।

छत्तीसगढ़ के जिलेदार

1) कृष्णराव अप्पा
2) अमृतराव
3) सदरूद्दीन
4) दूर्गा प्रसाद
5) इन्टुक राव
6) सखाराम बापू
7) गोविंद राव
8) गोपाल राव

11 दिसंबर, 1853

रघुजी –III की मृत्यु

प्रमुख घटनाएँ

1. नर बलि प्रथा का अंत
2. सती प्रथा का अंत
3. मुल्तानी ठगों–लुटेरों का दमन

राजस्व विभाग के अधिकारी

1. कमाविंसदार – परगने का प्रमुख राजस्व अधिकारी
2. अमीन – परगने का राजस्व संबंधी हिसाब
3. फडनवीस – आय–व्यय का लेखा–जोखा
4. बरारपाण्डे – लगान निर्धारण करने वाला
5. पण्डरी पाण्डे – मादक पदार्थों से होने वाली आमदनी पर कर लगाने वाला

कर

1. जमा राजस्व – भूमि के उपज पर लगने वाला कर
2. सायर – आयात–निर्यात कर
3. कलाली – मादक पदार्थों पर लगने वाला कर
4. सेवाई – अतिरिक्त कर/अस्थायी कर
5. पण्डरी – गैर किसानों (जैसे– बढ़ई, नाई, कुम्हार आदि) पर लगने वाला कर

नोटः– छत्तीसगढ़ की प्रादेशिक सेना के पहले कमाण्डर – कैप्टन माक्सन

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS